6

बुनियादी स्तर के बच्चों के लिए विकसित 'जादुई-पिटारा' एक पहल

पद्‌मा यादव*

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा को ध्यान में रखकर 3–8 वर्ष के बच्चों के लिए 'जादुई पिटारा' तैयार किया गया है। 'जादुई पिटारा' शुरुआती वर्षों में बच्चों को भाषा और संख्या ज्ञान के साथ-साथ जीवनपर्यंत सीखने के लिए तत्पर करने में मदद करता है एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य, शिक्षा की नींव को मज़बूत करने में मदद करता है। 'जादुई पिटारा' में शामिल है खेल-आधारित सामग्री जो बाल विकास के पाँच आयामों को सुदृढ़ करने में मदद करती है— शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, भाषायिक विकास, सृजनात्मक विकास और सामाजिक एवं भावनात्मक विकास। इस तरह यदि कहें तो इस पिटारे में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल सामग्री है। 'जादुई पिटारा' की खेल सामग्री का प्रयोग शिक्षक कक्षा में या अभिभावक घर पर बच्चों के साथ कैसे उपयोग कर सकते हैं यह जानना बहुत आवश्यक है, ताकि इसका प्रयोग सही दिशा में हो सके। शिक्षकों या शिक्षक-प्रशिक्षकों या फिर शिक्षा-प्रशासन के लिए भी ये जानना उपयोगी हो सकता है, क्योंकि ये उनकी ज़िम्मेदारी है कि देश के सभी विद्यालयों में ये अधिगम शिक्षण सामग्री पहुँचे और बच्चों को इसका लाभ मिल सके। इस लेख में विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई है, जैसे— 'जादुई पिटारा' क्यों? जादुई पिटारे में क्या है? जादुई पिटारे का कैसे उपयोग करें? और जादुई पिटारे के प्रयोग में शिक्षकों की क्या भूमिका है?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सुचारु रूप से लागू करने के लिए और बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 तैयार की गई है (एन.सी.एफ.-एफ.एस.)। इस पाठ्यचर्या में 3–8 साल के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए दिशा-निर्देश दिए गए हैं। ये दिशा-निर्देश शिक्षकों के लिए तो बहुत उपयोगी हैं, साथ ही ये शिक्षा प्रशासन, शिक्षक-प्रशिक्षक, अभिभावकों और समुदाय के लिए भी मार्गदर्शक का काम करती हैं। भारत में, बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 3–8 साल के बच्चों के लिए अब तक की पहली एकीकृत पाठ्यचर्या रूपरेखा है। यदि इसे सही तरीके से अमल में लाते हैं तो इसके बेहतरीन परिणाम हो सकते हैं तथा बुनियादी साक्षरता और

*प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) मिशन तथा सतत विकास लक्ष्य संख्या 4 (एस.जी.डी.) के लक्ष्यों की प्राप्ति हो सकती है। बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए बनी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा ने बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए खिलौना-आधारित शिक्षा प्रणाली की बात कही है। खेल-खिलौने बच्चों को बहुत प्रिय होते हैं। खिलौने या सीखने-सिखाने की सामग्री कैसी हो? उससे बच्चों को कैसे पढ़ाएँ? ताकि वे आसानी से अवधारणाओं को समझ जाएँ, इसकी विस्तृत जानकारी पाठ्यचर्या की रूपरेखा में दी गई है। शिक्षक अवधारणाओं को समझाने के लिए स्वयं सीखने-सिखाने की काफ़ी सामग्री बनाते हैं और बाज़ार से खरीद कर भी लाते हैं। अक्सर ये देखा गया है कि शिक्षक बिना सामग्री के यानी कविता, कहानी के माध्यम से भी समझाते हैं और कभी वे आस-पास उपलब्ध प्राकृत सामग्री का भी प्रयोग करते हैं। खिलौने या सीखने की सामग्री का चुनाव सावधानी से करना चाहिए। खिलौने या सामग्री का चुनाव कैसे करें? ये दिशानिर्देश भी पाठ्यचर्या की रूपरेखा में दिए गए हैं, जैसे— नुकीली, असुरक्षित वस्तुओं का चुनाव ना करें। ऐसे खिलौनें चुनें जिनसे एक से ज़्यादा कौशलों को विकसित करने में मदद मिले या जिसे बच्चे तोड़कर फिर से जोड़ सकें। उनसे उनका शारीरिक, मानसिक, भाषायिक, संवेगात्मक, सृजनात्मक और सामाजिक विकास हो सके। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को भी खिलौने द्वारा सीखने में मदद मिलती है। सुविधावंचित और विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को अन्य बच्चों के बराबर लाने की पूरी कोशिश की जानी चाहिए। बच्चे को चिंतन द्वारा तर्क के आधार पर स्वयं करके सीखने में आनंद आता है। इस प्रक्रिया से वे सीखते भी ज़्यादा हैं और सीखी हुई चीज़ ज़्यादा याद भी रहती है। कक्षा में शिक्षण सामग्री को बनाने के लिए कम लागत वाली सामग्री या बिना लागत वाली सामग्री पर ही ज़ोर देना चाहिए। शिक्षण सामग्री का निर्माण जब शिक्षक बच्चों की सहायता से करते हैं तो इस निर्माण की प्रक्रिया से भी बच्चे अनेक कौशल सीख जाते हैं और उनकी छोटी मांसपेशियों का भी विकास होता है और उनके आँख और हाथ का तालमेल बढ़ता है। स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री जिसे बच्चे अपने परिवेश में देखते हैं उनका प्रयोग करना चाहिए। अपने आप प्रयोग करके किसी चीज़ से बच्चे सीखते हैं तो वह ज़्यादा लाभदायी होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत और बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा को ध्यान में रख कर 3–8 वर्ष के बच्चों के लिए 'जादुई पिटारा' तैयार किया गया है जिसमें बच्चों के लिए खेल-आधारित शिक्षण सामग्री शामिल है।

'जादुई पिटारा' क्यों?

खेल सामग्री बच्चों को खेल के साथ-साथ सीखने के अवसर प्रदान करती है, पर शिक्षक के पास हमेशा खेल सामग्री उपलब्ध हो या वे ज़रूरत के हिसाब से खेल सामग्री का निर्माण कर लें ये ज़रूरी नहीं। ऐसे में कई बार वे बिना किसी खेल सामग्री के पढ़ाने का प्रयत्न करते हैं, परंतु इससे बच्चों को प्रत्यक्ष या अनुभव के आधार पर सीखने के अवसर प्राप्त नहीं हो पाते हैं। 3-6 साल के बच्चे संज्ञानात्मक विकास के उस स्तर पर होते हैं जब उनका अनुभव जो प्रत्यक्ष होता है, उससे अधिक प्रभावित होता है। वे अपने पर्यावरण के प्रत्यक्ष तथा ठोस अनुभवों से सीखते हैं। अतः खेल और क्रिया उनके सीखने के लिए आवश्यक है। खेलते समय बच्चे अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते हैं। जादुई पिटारे में शामिल खेल सामग्री बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक है और मातृभाषा में सीखने को प्रोत्साहित करती है। अतः बालवाटिका के बच्चों के लिए ये सामग्री बहुत ही महत्वपूर्ण है। बालवाटिका में किसी किताब की आवश्यकता नहीं होती, बच्चों को सीखने के लिए ढेर सारे खिलौने चाहिए। कक्षा 1 और 2 में, कार्यपत्रिकाएँ (worksheets) एवं पाठ्यपुस्तकों की आवश्यकता होती है, वह भी चित्रात्मक जिसमें रंगीन चित्र और ढेर सारी खेल क्रियाएँ हों।

जादुई पिटारे में क्या है और इसमें शामिल सामग्री का प्रयोग कैसे करें?

जादुई पिटारे में बालविकास के सभी आयामों (संज्ञानात्मक विकास, भाषायिक विकास, गणितीय विकास, शारीरिक विकास, सृजनात्मक एवं सौंदर्यबोध) को सुदृढ़ करने के लिए सामग्री है। इसमें शामिल हैं बहुत सारे खेल-खिलौने, शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए उन्मुख, फ्लैशकाड्र्स, कहानी-काड्र्स, पोस्टर, पहेली, कठपुतलियाँ और बच्चों के अनुकूल गतिविधि पुस्तक आनंद, कार्यपत्रिकाएँ इत्यादि। आइए जानें इनका प्रयोग कैसे करें।

जादुई पिटारे में शामिल संज्ञानात्मक विकास सामग्री

संज्ञान का अर्थ है अपने आस-पास के वातावरण को जानना और समझना। अतः संज्ञानात्मक विकास

से अभिप्राय उन मूलभूत कौशलों के विकास से है जो हमें अपने पर्यावरण को जानने में सहायता करते हैं। इस पिटारे में बच्चों के समग्र विकास के लिए अनेक खेल सामग्री हैं जो बहुआयामी हैं। पिटारे में उपलब्ध पज़ल्स, खेल-खिलौने, रंग-बिरंगे मोती, लेसिंग काड्र्स, स्टैकिंग रिंग, लकड़ी के ब्लॉक्स जैसी खेल सामग्री संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देती है। इनकी सहायता से शिक्षक रंग, आकार, आँख और हाथ के तालमेल, तार्किक चिंतन, गणितीय कौशल और पर्यावरण के बारे में आसानी से समझा सकते हैं। बच्चे इनकी सहायता से सीखने की अच्छी आदतों का विकास और सामाजिक कौशल भी विकसित कर सकते हैं। बच्चे जैसे-जैसे बढ़ते हैं उनकी सोचने की प्रक्रिया पर पर्यावरण का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। बच्चों को जितने अधिक अनुभव होंगे उसी के अनुसार उनकी समझने की शक्ति विकसित होगी इसलिए उनके सीखने की गति बढ़ाने के लिए उन्हें विविध अवसर एवं अनुभव देने चाहिए। किसी भी संबोध के विकास के लिए क्रियाओं का नियोजन निम्नलिखित क्रम में किया जाना चाहिए, जैसे— मिलान करना, पहचानना, नाम बताना, क्रमीकरण, वर्गीकरण। इसके लिए भी जादुई पिटारे में पिक्चर काड्र्स, डोमिनोइज और फ़्लैशकाड्र्स हैं।

जादुई पिटारे में शामिल भाषायिक विकास सामग्री

पढ़ने और सीखने में अनेक कौशलों का समावेश है, जैसे— अपने आस-पास के पर्यावरण में उपलब्ध वस्तुओं एवं व्यक्तियों के विषय में बात कर पाना, ध्यानपूर्वक सुनकर ध्वनियों को पहचानना एवं शब्दों के अर्थ समझ पाना, अवलोकन कर चित्रों में दी गई जानकारी के साथ संबंध स्थापित करना आदि। इन सभी कौशलों के प्रयोग के लिए बच्चों को अनेक अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है। भाषायिक विकास के कौशल के लिए जादुई पिटारे में चित्र पठन पोस्टर, कविता पोस्टर, अक्षर काड्र्स, कहानी काड्र्स, कार्यपत्रिकाएँ तथा कहानी सुनाने के लिए रंग-बिरंगी कठपुतलियाँ शामिल हैं।

इनकी सहायता से बच्चों में मौखिक अभिवृत्ति, शब्द भंडार, पढ़ने और लिखने की क्षमता को सरलता से विकसित किया जा सकता है। बच्चे जब इन से खेलते हैं तो भाषायिक विकास के साथ उनकी सामाजिक परिवेश की समझ भी विकसित होती

है। शिक्षक इनका प्रयोग कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत करने या किसी अवधारणा या विषयवस्तु को समझने के लिए कर सकते हैं। जादुई पिटारा में उपलब्ध आनंद वर्कशीट या कार्यपत्रिकाएँ एकीकृत वर्कशीट हैं, इनके माध्यम से पढ़ना-लिखना सीखाना या अक्षर बोध कराना आसान हो जाता है। शिक्षकों को स्वयं समय-समय पर बच्चों को ऐसी वर्कशीट बनाकर देनी चाहिए। इससे बच्चों को रंग भरना, अक्षर का आकार बनाना, चित्र को देखकर उसके बारे में विचार करना, शब्द भंडार विकसित होना आदि का अवसर तो मिलता ही है। साथ ही कुछ समय अकेले काम करने का मौका भी मिलता है। बच्चा कितना सीख पाया है इसका अनुमान भी शिक्षक वर्कशीट द्वारा लगा सकते हैं।

बच्चों में सुनने की क्षमता को विकसित करने हेतु कई तरह के खेल एवं क्रियाएँ शिक्षकों द्वारा कराई जा सकती हैं, जैसे—

- घुँघरू, ताली, ढफली, घंटी, सीटी, चुटकी आदि की आवाज़ की पहचान करना।
- जानवरों की आवाज़ों को सुनाकर उनकी पहचान करना।
- आँख बंद करके वातावरण में होने वाली आवाज़ों को महसूस करना।
- कपड़े के पीछे बच्चों को खड़ा करके, उसकी आवाज़ की पहचान करना।
- पानी उड़ेलने की, सिक्के के गिरने की, साइकिल की घंटी इत्यादि की आवाज़ सुनाकर उसकी पहचान करना।
- किसी दिशा में आवाज़ करके बच्चों से पूछना कि किस दिशा से आवाज़ आ रही है।
- पहेलियाँ पूछना व कहानियाँ सुनाना इत्यादि।
- मुक्त बातचीत, कहानी गढ़ना और सुनाना, नाटकीकरण, भाषा या शब्दों के खेल, मुक्त खेल और नाटकीय खेल आदि। सभी क्रियाकलाप बच्चों में भाषायिक कौशल के विकास में सहायक होते हैं। अतः जादुई पिटारे में उपलब्ध पिक्चर पोस्टर, फ़्लैश काड्र्स, आदि का प्रयोग कर भाषा संबंधी कई खेल क्रियाएँ की जा सकती हैं, जैसे— मुक्त वार्तालाप, चित्र-पठन, बालगीत, कहानियाँ बनाना, किसी वस्तु का चित्र देखकर उसके बारे में बोलना, जैसे— पेन, पेंसिल, टिफिन आदि, कठपुतलियों का खेल, नाटकीकरण आदि। किसी शब्द की प्रथम ध्वनि

को पहचान कर उसी ध्वनि से आरंभ होने वाले अन्य शब्द बनाना।

- दिए गए शब्द से तुक मिलाकर नए शब्द बनाना, भले ही वे निरर्थक शब्द हों।
- एक जैसी दिखने वाली तस्वीरों या नमूनों को अलग तरह की दिखने वाली तस्वीरों या नमूनों और वस्तुओं से अलग करना।
- एक जैसी दो तस्वीरें जिनमें केवल एक भिन्नता हो, उस भिन्नता को पहचानना।
- शब्दों के समूह में अलग शब्द पहचानना।
- अपना लिखा हुआ नाम पहचानना।
- सुने गए और बोले गए में संबंध स्थापित करना। बाएँ से दाएँ दिशा में क्रियाओं का आयोजन करना इत्यादि।

सुनने की क्षमता बढ़ाने के लिए बातचीत, कहानियाँ, कविताएँ इत्यादि बहुत महत्वपूर्ण हैं। जादुई पिटारे में बहुत से कहानी के पिक्चर पोस्टर एवं काड्र्स, *बरखा सीरीज*, *फिरकी बच्चों की*, जैसी पुस्तकें शामिल हैं।

लिखने की तैयारी हेतु निम्न क्रियाएँ करवाई जा सकती हैं

बिंदुओं का मिलान, घिरे हुए क्षेत्र में रंग भरना, चित्र में रेखा खींचते हुए ढूँढ़ना, कोई नमूना बनाना इत्यादि। प्रारंभिक अवस्था में चॉक/खड़िया या रंग भरने वाले क्रेयॉन का प्रयोग ज़्यादा उचित रहता है। बाद में समन्वय और नियंत्रण के लिए आवश्यकता के अनुसार पेंसिल दी जा सकती है। *जादुई पिटारा* में हिंदी, अंग्रेज़ी और गणित में ट्रेसिंग कार्ड्स हैं। बच्चे आकार में भिन्नता देख सकते हैं, नाम पहचान सकते हैं, अंगुलियों को

अक्षर काड्र्स के आकार पर फेरकर बच्चे अक्षरों का आकार पहचान सकते हैं। किसी एक अक्षर काड्र्स से शब्द बना सकते हैं। कहानी गढ़ सकते हैं।

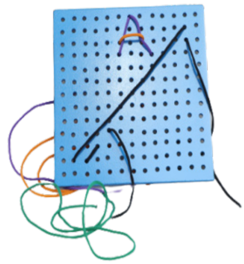

जादुई पिटारे में शामिल गणितीय विकास सामग्री

बच्चों के गणितीय विकास के लिए पिटारे में सेल्फ-करेक्शन नंबर-काड्र्स, नंबर ट्रेसिंग काड्र्स,

डॉट डोमिनो, जूनियर अबेकस, वेल्क्रो के खिलोने, रंग-बिरंगी टाइल्स जिनसे कोई भी आकार बना सकते हों, प्लेस वैल्यू कार्ड्स, लुप्त मेंढक आदि शामिल हैं।

जादुई पिटारे में शामिल शारीरिक विकास सामग्री

शारीरिक विकास के लिए खेल और व्यायाम बहुत ज़रूरी है। गेंद से खेलना बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। इसके लिए पिटारे में एक गेंद भी शामिल है। इससे बच्चों की स्थूल मांसपेशियों का विकास होता है। पढ़ने और लिखने के लिए सूक्ष्म मांसपेशियों के विकास की भी ज़रूरत होती हैं जैसे— आँख और हाथ का तालमेल, लिखने के लिए अंगुलियों का विकास आदि। जादुई पिटारे में बच्चों की सूक्ष्म मांसपेशियों के विकास के लिए मोती, फिरकी, ब्लॉक्स, फीली बैग शामिल हैं। शिक्षक इनका प्रयोग कर बच्चों को खेल-खेल में बड़े-छोटे, कम-ज़्यादा, गिनती, अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे, जैसी अवधारणाओं का ज्ञान भी आसानी से दे सकते हैं। शिक्षिकों को चाहिए कि वे ऐसी क्रियाओं का चुनाव करें जिनमें विविधता हो, साथ ही बच्चों की आयु रुचियों एवं आवश्यकताओं पर आधारित हों। स्थूल एवं सूक्ष्म मांसपेशियों के प्रयोग में संतुलन होना चाहिए। स्थूल मांसपेशियों के संतुलन से तात्पर्य स्थूल मांसपेशियों की क्रियाओं पर नियंत्रण होने से है, जैसे— जाँघ, हाथ-पाँव, धड़ और घुटनों आदि की क्रिया। सूक्ष्म मांसपेशियों के संतुलन का अर्थ सूक्ष्म मांसपेशियों की क्रियाओं पर नियंत्रण होने से है, विशेष रूप से अंगुलियों तथा कलाई की मांसपेशियों, आँख और हाथ की मांसपेशियों का संतुलन। इससे बच्चे बाद में की जाने वाली क्रियाओं के लिए तैयार होते हैं, जैसे— लिखना, सृजनात्मक क्रियाएँ तथा अन्य सभी ऐसी क्रियाएँ जिनके लिए अधिक, कुशल तथा नपे-तुले कलात्मक और व्यावसायिक कार्य की आवश्यकता होती है।

स्थूल मांसपेशियों के विकास के लिए क्रियाएँ

स्थूल यानी बड़ी मांसपेशियों के विकास के लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ बहुत उपयोगी होती हैं, जैसे—

- **चलना**— व्यायाम करना, स्वतंत्र रूप से मैदान में चलना, जानवरों की चाल में चलना व आगे-पीछे की ओर चलना।
- **दौड़ना**— एक स्थान से दूसरे स्थान पर दौड़ना, टायर को लुढ़काते हुए दौड़ना व एक टायर से दूसरे टायर में कूदना।
- **कूदना व उछलना**— खरगोश व मेंढक की चाल में कूदना, आगे व पीछे की दिशा में उछलना इत्यादि।
- **शारीरिक संतुलन**— सीधी बिछी रस्सी पर चलना, टेढ़ी बिछी रस्सी पर चलना एवं गेंद पकड़ कर चलना आदि।
- **झूलना**—पेड़ पर टायर का झूला डालकर बच्चों को झुलाना, मैदान में लगे झूलों पर बच्चों को झुलाना।
- **चढ़ना व उतरना**— मैदान में बनी सीढ़ियों पर चढ़ना व उतरना, झूलों पर बच्चों को चढ़ने व उतरने देना।

- **गेंद से संबंधित खेल**—गेंद को फेंकना-पकड़ना, गेंद को पैर से मारना, गेंद को सिर के ऊपर व पैरों के नीचे से निकालना, लक्ष्य पर गेंद फेंकना इत्यादि।

इसी तरह और भी कई खेल बच्चों द्वारा खेले जाते हैं, जैसे पकड़म-पकड़ाई, म्यूजिकल चेयर इत्यादि। इन गतिविधियों को सफलतापूर्वक करवाने के लिए जादुई पिटारे में ढफली, रस्सी की सीढ़ी, गेंद, इत्यादि शामिल हैं। इनका प्रयोग करके आप बच्चों में शारीरिक-मानसिक विकास के साथ सामाजिक और भाषिक विकास को भी बढ़ावा दे सकते हो।

सूक्ष्म मांसपेशियों के विकास के लिए क्रियाएँ—

बच्चों में आँख और हाथ के तालमेल सुदृढ़ करने के लिए और उनकी छोटी मांसपेशियों को विकसित करने के लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ करवाई जाती हैं, जैसे—

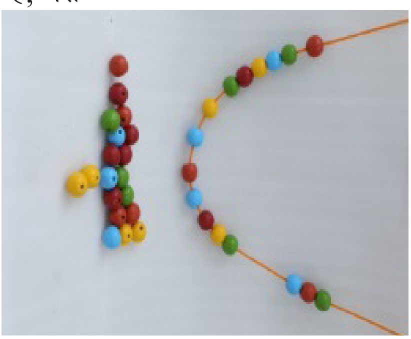

- **पिरोना**— मोतियों को तार में पिरोना एवं उससे रंग-बिरंगी माला बनाना, छोटे-बड़े आकार के मोती तार में पिरोना, रंगों के क्रम में मोती पिरोना इत्यादि।
- **बीजों से क्रियाएँ**— दिए गए आकार के किनारे पर बीज रखना, बीजों को कागज़ पर रखकर उससे गोल, चौकोर एवं त्रिभुज आकार बनाना, चेहरे का आकार बनाना, प्रोजेक्ट से संबंधित विभिन्न आकृतियों जैसे झोंपड़ी, झंडा, आदि बनाना।
- **छाँटना**— विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को छाँटना जैसे पत्थर, पत्तियाँ, मोती आदि।
- **रेत पर आकार बनाना**— रेत पर अंगुली से कोई भी आकृति बनाना, बर्तनों में रेत भरकर उड़ेलना, गीली रेत पर पत्तियाँ, सींक तथा झंडा गाड़ना इत्यादि।
- **उड़ेलना**— एक गिलास से दूसरे गिलास में पानी व रेत उड़ेलना।
- **फ्रेम पर कार्य करना**— फ्रेम पर टिच-बटन, काज बटन, हुक, चेन, गाँठ बाँधने आदि का प्रयास करना।
- **मिट्टी का काम**— मिट्टी से विभिन्न प्रकार के बर्तन व मिठाइयाँ, जैसे— लड्डू, बर्फी, चकला, तवा आदि बनाना, अखबार को मरोड़कर बॉल बनाकर उस पर रंग करना।
- **कागज़ फाड़ना और चिपकाना**— कागज़ को लंबा-लंबा व छोटा-छोटा फाड़कर चिपकाना, कागज़ मोड़ना और उससे टोपी, जोकर, नाव, झोंपड़ी का आकार बनाना।

- **रंग घिसना**— पेपर पर रंग घिसना, आकृति में रंग भरना, चित्र बनाना, पेंटिंग करना, हथेली, मुट्ठी, पैर के तलवे, अँगूठे पर रंग लगाकर कागज़ पर छपाई करना, सब्ज़ियाँ, जैसे— आलू, भिंडी, प्याज, गोभी, कमल ककड़ी आदि से छपाई करना, कपड़े, ऊन, चायपत्ती, रेत, लकड़ी के बुरादे से आकृति बनाना, फूल एवं पत्तियों को कागज़ पर घिसकर उनसे चित्र बनाना इत्यादि।

जादुई पिटारे में भी एक फ्रेम है जिसमें फीता बाँधना सीख सकते हैं या गाँठ बाँधना सीख सकते हैं। पिटारे में अक्षर फ्रेम है जिसमें पेंसिल की सहायता से अक्षर के आकार पर पेंसिल फेर सकते हैं, लेसिंग बोर्ड है जिस पर आप कोई भी पैटर्न, या अक्षर का आकार बना सकते हैं। इस सामग्री का प्रयोग करते हुए बच्चों में सृजनात्मकता के साथ-साथ भाषायिक कौशल, सामाजिक और भावनात्मक कौशल विकसित करने के अवसर होते हैं।

जादुई पिटारे में शामिल सृजनात्मक एवं सौंदर्यबोध के लिए सामग्री

बच्चों को गीत-संगीत, कविताएँ बहुत पंसद होती हैं। बुनियादी स्तर पर शिक्षक ज़्यादातर इसी माध्यम से बच्चों को सिखाते हैं। इसलिए ढफली, बाँसुरी, ड्रम, ढोलक, हार्मोनियम जैसी सामग्री बहुत काम की वस्तुएँ हैं और कक्षा में हमेशा उपलब्ध रहनी चाहिए। जादुई पिटारे में बच्चों के लिए ढफली, डमरू और बाँसुरी भी शामिल हैं। इनका प्रयोग करके आप बच्चों में ध्वनि, ताल, लय, नृत्य, कला के प्रति रुचि विकसित कर सकते हैं।

जादुई पिटारे में शामिल शिक्षकों के संवर्धन के लिए सामग्री

इस पिटारे में शिक्षकों के लिए ढेर सारी पुस्तकें, प्रशिक्षकों के लिए उन्मुख हस्तपुस्तिका तथा बच्चों के लिए आनंद, गतिविधियाँ-कार्यपत्रिकाएँ शामिल हैं। बालवाटिका कार्यक्रम को कहानियों, तुकबंदियों के खेल, खिलौने, गीतों, आदि के माध्यम से ख़ुशी के साथ, खेल और गतिविधि-आधारित शिक्षणशास्त्र का उपयोग करके कार्यान्वित करने की आवश्यकता है। *उन्मुख* में 3–6 वर्ष के बच्चों के पंचकोशीय विकास के लिए गतिविधियाँ दी गई हैं जो बच्चों की आयु और विकास को ध्यान में रखकर सुझाई गई हैं। कोई भी एक गतिविधि यदि आप बच्चों के साथ करेंगे तो उसमें सभी आयामों को भी विकसित करने का प्रयास शामिल होना चाहिए, क्योंकि विकास के सभी आयाम एक-दूसरे पर आश्रित और आधारित होते हैं।

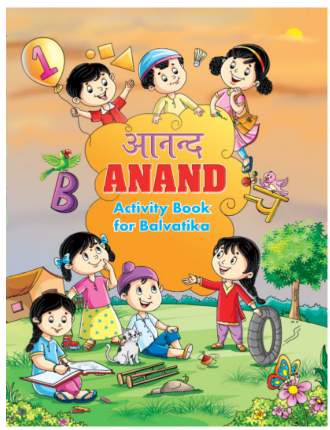

उन्मुख में ई.सी.सी.ई. और बालवाटिका से जुड़ी मूल बातें बताई गई हैं, जैसे शिक्षण प्रक्रिया क्या हो, दिनचर्या कैसी होनी चाहिए, आकलन कैसे होना चाहिए आदि, जो ई.सी.सी.ई. के क्षेत्र में काम करने या रुचि रखने वाले को मालूम होनी चाहिए। शिक्षक *उन्मुख* में दी गई गतिविधियों को कराते समय पिटारे में उपलब्ध सामग्री का प्रयोग कर सकते हैं। इन सबके प्रयोग से बच्चों के समग्र विकास के लिए खेल गतिविधियाँ कराने में शिक्षक को बहुत मदद मिलेगी तथा साथ ही बच्चों को खेल-खेल में सीखने के अनेक अवसर मिलेंगे। बच्चे भी खुश और शिक्षक भी खुश।

जादुई पिटारे के सही प्रयोग हेतु शिक्षक-प्रशिक्षण की आवश्यकता

प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा केंद्रों में शिक्षिका का कार्य बहुत विशिष्ट होता है। प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा में शिक्षिकों के लिए औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। सुनियोजित और सुसंगठित प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा हम शिक्षिकों को इस बात के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं कि वे

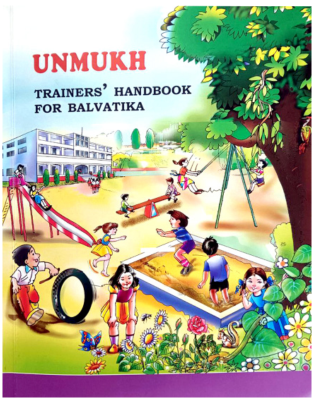

बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास की ओर ध्यान दें और उनके लिए नई-नई खेल सामग्री का विकास करें, ताकि बच्चों की सीखने में रुचि बनी रहे। बच्चों के शारीरिक विकास, भाषायी कौशलों, संज्ञानात्मक विकास, भौतिक पर्यावरण संबंधी संबोधों को विकसित करने हेतु जादुई पिटारे की सामग्री का उपयोग कर कैसी क्रियाएँ करवाई जाएँ एवं कठपुतली कैसे बनाएँ व उनका प्रयोग कक्षा में किस प्रकार करें, इन बिंदुओं पर प्रशिक्षण होना चाहिए।

जादुई पिटारे के संदर्भ में शिक्षकों की भूमिका

बच्चों को शिक्षण केंद्रों में स्वस्थ एवं समृद्ध पर्यावरण मिले, सीखने के लिए खेल सामग्री मिले, इसमें शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। वे सामग्री का निर्माण भी कर सकते हैं और उपलब्ध वस्तुओं के माध्यम से अवधारणाओं को आसानी से समझा भी सकते हैं। वे बिना सामग्री के भी कविता, कहानियों, कठपुतलियों और पहेलियों के माध्यम से बच्चों को खेल-खेल में सिखा सकते हैं। शिक्षकों का बच्चों के लिए अपना-अपना 'जादुई पिटारा' हो सकता है। अभिभावक भी अपना-अपना 'जादुई पिटारा' बना सकते हैं। हर घर में बच्चों का 'जादुई पिटारा' हो सकता है। बालविकास केंद्रों में शिक्षिकों को विभिन्न भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं, जैसे माता-पिता भोजन विशेषज्ञ, खेल-कूद का साथी इत्यादि। बच्चों के प्रति प्रेम और उनके विकास में शिक्षिकों की रुचि का होना, सर्वोपरि गुण है। शिक्षिकों को नए-नए विचारों का स्वागत करने वाला, नया ज्ञान आर्जित करते रहने वाला और सदा विकासशील होना चाहिए।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (बुनियादी स्तर) 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

विधि और न्याय मंत्रालय. 2009. *शिक्षा का अधिकार अधिनियम* 2009. विधायी विभाग, भारत सरकार.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.